'ख़ुदा सही सलामत है' उपन्यास में नारी संघर्ष.

विनोद बाबुराव मेघशाम[1]
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
खैरताबाद, हैदराबाद.

शक्तिकुमार द्विवेदी[2]
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान दक्षिण
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
खैरताबाद, हैदराबाद.

Article Link: https://aksharasurya.com/2023/11/vinod-baburao-meghsham-shaktikumar-dwivedi-2/

शोध सार:

रवीन्द्र कालिया साठोत्तरी साहित्य के प्रसिद्ध कथाकार के रूप में जाने जाते हैं। जिन्होंने अपने कथा साहित्य में समाज के हर एक पहलू को बहुत ही गंभीरता के साथ चित्रित करने का प्रयास किया है। 'ख़ुदा सही सलामत है' उपन्यास में नारी के सामाजिक स्थिति को बहुत ही मार्मिकता के साथ स्त्री शोषण एवं उसके संघर्ष को दशार्या है। भारतीय समाज में स्त्री का सामाजिक एवं पारिवारिक रूप से कैसे शोषण होता है और समाज में स्त्री अपने गौरव एवं सम्मान के लिए कैसे संघर्ष करती है, जैसे की उपन्यास का पात्र अज़ीज़न एक तवायफ़ होते हुए भी अपनी पुत्री का जीवन एक सामान्य युवती के समान ही समाज में गौरव के साथ उसका विवाह करने की अपेक्षा रखती है। गुलाबदेही जैसी स्त्री पति के द्वारा मारपीट के बावजूद भी अपने पति के प्रति एक पत्नी का कर्तव्य निभाती है और साथ ही पति से पीड़ित स्वयं सम्मान के साथ में जीवन यापन करने का प्रयास करती है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्री का शोषण कैसे किया जाता है इसका उदाहरण कोतवाल गुलाबदेही के व्यवहार एवं आचरण पता चलता है । पंडित की पत्नी पंडिताइन मास्टर के घर में साफ सफाई का काम करने पर मास्टर एवं

उनके पुत्र के द्वारा किया गया लैंगिक शोषण, इसके बावजूद भी ऐसी बुरी स्थिति के साथ लढकर काम करने वाली पंडिताइन समाज के लिए स्त्री संघर्षि का परिचय कराती है। भारतीय नारी को परिवार में मात्र पति से ही नहीं बल्कि समाज में अन्य लोगों के द्वारा भी अनेक यातनाएँ सहनी पड़ती है और साथ में वह भी सामान्य लोगों की तरह ही एक गौरवमय जीवन जीने का संघर्ष करती है।

बीज शब्द:

रवींद्र कालिया, नारी का संघर्षमय जीवन, पारिवारिक शोषण, तवायफों का जीवन, समाज में सम्मान।

.....

मूल आलेख: भारतीय समाज में नारी सदियों से अनेक प्रकार के सामाजिक शोषण एवं पीड़ा का शिकार होती हुई दिखाई देती है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समाज में नारी सामाजिक एवं धार्मिक बंधनों के कारण अनेक प्रकार की यातनाओं को सहकर जीवन यापन करती हुई दिखाई देती है। भारतीय समाज में नारी सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक संस्कारों के अधीन एवं रूढि परंपराओं के बंधनों में बंधी हुई दिखाई देती है। साथ ही आधुनिक समाज में नारी अपने अधिकार एवं सामाजिक स्थान-मान के साथ जीवन जीने का संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। इसी का उदाहरण रवींद्र कालिया के 'खुदा सही सलामत है' उपन्यास के पात्रों के द्वारा नारी के संघर्षमय जीवन को चित्रित करने का प्रयास करते हैं। उपन्यास के मुख्य पात्र अज़ीजन, गुलाबदेही, हसीना, पंडिताइन कैसे पुरुषों के द्वारा उनका शोषण एवं समाज में शोषित होती है। साथ ही उसका विरोध कर समाज में गौरव के साथ जीने का संघर्ष करते हैं। उसका चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।

रवींद्र कालिया एक यथार्थवादी उपन्यासकार है। जिन्होंने अपने उपन्यास में सामाजिक यर्थाथ को चित्रित करने का प्रयास करते हैं। अपने उपन्यास में नारी के संघर्ष को लेकर उनके जीवन में आने वाली

कठिनाइयों और समाज में सम्मान के साथ जीवन जीने का प्रयत्न करने वाली नारियों के एक नहीं अनेक घटनाओं का चित्रण 'ख़ुदा सही सलामत है' उपन्यास में देखने को मिलता है। स्त्री के सामाजिक स्थिति के संदर्भ में डॉ. आशारानी व्होरा कहती है कि "भारत की औसत नारी आज भी सामाजिक दृष्टि से उतनी ही पिछडी है। इसलिए या तो वह अपने हितों और हकों से अनभिज्ञ है या हित स्वार्थ में नए प्राप्त हकों का दुरुपयोग करने लगी है।"[1] रवींद्र कालिया जी इस उपन्यास की मुख्य पात्र तवायफ अजीज़न, हजरी जैसे तवायफों की जीवन से जुडी घटनाओं को सामाजिक यथार्थ के साथ दर्शाने का प्रयत्न किया है। यह उपन्यास मुलत: हिंदू मुस्लिम के सहज जीवन का एक सजीव चित्रण है। इस उपन्यास में नारी कैसे पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं अपनी जीवन शैली को सुधारने के लिए प्रयत्न करती है उसका चित्रण इस उपन्यास में देख सकते हैं। उपन्यास का पात्र गुलाबदेही के माध्यम से रवींद्र कालिया यह संदेश देने का प्रयत्न करते हैं कि पति के द्वारा प्रताड़ित नारी कैसे सम्मान के साथ खुद व्यवसाय करके जीवन यापन करने का प्रयास करती है इसको इस संदर्भ में देख सकते हैं जैसे की "ऐसे अहसान फरामोश आदमी की सूरत भी न देखनी चाहिए। हजरी बोली, तुम्हारे लिए कोठरी का इन्तजाम तो कर दूँगी। मगर तुम्हारा पेट कौन भर देगा। मेरे पास चालीस पचास रूपए है। सोचती हूँ चाट का खोमचा लगाऊँगी"[2] इस कथन के द्वारा यह समझा जा सकता है कि पारिवारिक जीवन में नारी का पारिवारिक शोषण होता हुआ दिखाई देता है।

रवीन्द्र कालिया गुलाबदेही के माध्यम से वैवाहिक जीवन में पति पत्नी के चरित्र पर संशय करने से कैसे पारिवार में अशान्ति निर्माण होती है। इसका कारण गुलाबदेही और शिवलाल के आयु में दिखाई देने वाला बडे अंतर के परिणाम उसके चरित्र पर संशय करता है और उसको किसी न किसी प्रकार से उसे कष्ट देता है। उसे इस कथन

के द्वारा देख सकते हैं। "यह औरत जात आदमी का पूरा सुख-चैन है। शिवलाल छीन लेती बड़ी नफ़रत से अपनी पत्नी की ओर देखता। अगर कहीं गुलाबदेई का पल्लू उसके वक्ष पर से हट गया होता तो वह बात बीच में छोड़कर उसके बालों को मुट्ठी में लेकर झंझोड़ते हुए बेकाबू हो जाता, हरामज़ादी यह नुमाइस किसके लिए लगा रखी है?"[3] पति और पत्नी के बीच का बडा अंतर से नारी पुरुष के द्वारा कैसे पीड़ा का अनुभव करती है, साथ ही स्त्री अपने चरित्र को पवित्र रखकर जीवन यापन करने का प्रयत्न करती है उसका चित्रण भी यहाँ पर देखने को मिलता है। जैसे कि गुलाबदेही का पति चोरी का पट्टा खरीदने के करण उसे जेल में कैद किया जाता है। वह उसे छुड़ाने के लिए वह अनेक प्रयत्न करती है। जब वह कोतवाल साहब से मिलकर अपने पति को छुड़ाने का प्रयत्न करती है तो कोतवाल साहब उसके शारीरिक सौंदर्य पर मोहित होकर उसका लैंगिक शोषण करने का प्रयास करता है। जैसे कि "तुम्हारी बाँहें बहुत खूबसूरत हैं। उन्होंने गुलाबदेही की बाँह पर हाथ फेरा और अपने पास बैठा लिया, उन्होंने गुलाबदेई के गाल काट खाया। गुलाबदेई दहशत में उठकर भागने लगी कि कोतवाल साहब की मजबूत गिरफ्त ने ऐसा झटका दिया कि वह उनकी गोद में आ गिरी।....कोतवाल साहब ने बैठे-बैठे ही नम्बर मिलाना चाहा। दूसरा हाथ गुलाबदेई के बदन की तमाम गोलाइयाँ ..."[4] इस प्रकार से समाज में स्त्री केवल परिवार में नहीं बल्कि सामाजिक जीवन में भी उसका शोषण होता रहा है।

ख़ुदा सही सलामत है उपन्यास में तवायफ अजीज़न समाज में गौरवमय जीवन यापन करने का प्रयास करती है और उसकी पुत्री गुलबदन के संवाद समझ सकते हैं कि अज़ीज़न एक तवायफ होते हुए भी अपनी बेटी गुलबदन को समाझ में सामान्य स्त्री जिस प्रकार से गौरव का जीवन जीती हैं उसी प्रकार का अपनी बेटी का जीवन सुख और शांति के साथ रहे, इस प्रकार की अपेक्षा रखती है। लेखक इस संदर्भ में लिखते है कि "देखो बिटिया इस शेरो-शायरी ने ही तुम्हारी अम्मा को तबाह किया

था। मैं चाहती हूँ, तहेदिल से चाहती हूँ, मेरी बिटिया इस नरक से किसी तरह कन्नी काट ले!"[5] अज़ीज़न के द्वारा रवींद्र कालिया नारी के उस संघर्ष को दिखाने का प्रयत्न करते हैं। जो खुद समाज में अपना जीवन मान-अपमान को पीकर जीवन यापन करने वाली अज़ीज़न अपने पुत्री के भविष्य को लेकर चिंतीत है। कहीं उसका जीवन भी उसी की तरह ना हो जाए। इस समस्या को दूर करने का प्रयत्न करती है। जैसे कि अज़ीज़न की पुत्री गुलबदन प्रोफेसर शर्मा से प्रेम करती है, तो अज़ीज़न उसके विवाह को लेकर, उसके भविष्य को लेकर वह समाज में सम्मान के साथ अपनी पुत्री का विवाह करने की शर्त रखती है। यहाँ तक की प्रोफेसर शर्मा बारात लेकर उनके घर यानी की कोठी तक आए। कयोंकि समाज उसे सम्मान के साथ स्वीकार करें। इस प्रकार की अपेक्षा रखने वाली अज़ीज़न भारतीय समाज में सम्मान पाने के लिए संघर्ष करती है जिसका चित्रण रवींद्र कालिया ने इस प्रकार से किया है "आप एक पढ़े-लिखे आदमी हैं। यह सब आप खुद तय कर सकते हैं। शादी की हर रस्म इसी मुहल्ले में होगी।...'इस घर में बड़े-बड़े रईस और राजे-महाराजे आ चुके हैं। फिर बारात क्यों नहीं आएगी? ...शादी के बाद मैं एक रिसेप्शन दूँगी, जिसमें पाँच सौ से कम लोग न पिछले पचास बरसों से इस गली में बारात नहीं आई। अगर कचहरी में शादी हो गई और बारात न आई तो लोग यही कहेंगे कि गुल किसी के साथ भाग गई। आप इन लोगों की ज़हनियत से वाक़िफ़ नहीं।"[6] इसी उपन्यास का और एक पात्र चमेली, जो वह भी एक जमाने की तवायफ थी। लेकिन चमेली की पुत्री हसीना एक सामान्य परिवार के युवक लतीफ के साथ प्रेम कर विवाह कर लेती है और दोनों शहर में आकर जीवन यापन करते हैं। लेकिन लतिफ के मित्र हसीना के सौंदर्य एवं रंग रूप के प्रति कामवासना की भावना से देखने लगते हैं। उन्हें हसीना के माता-पिता के बारे में जानकारी मिलती है जिस के कारण उसे इस दृष्टि से देखने लगते हैं। वह एक तवायफ़ की पुत्री है और

उसे अपना हवस मिटाने की दृष्टि से देखते हैं। परंतु हसीना एक ऐसी बदनसीब युवति है जो जन्म तो एक तवायफ़ के कोख से लिया, लेकिन उसका चाल चलन एवं संस्कार सभ्य समाज से भी कहीं अधिक सभ्य दिखाई देती है। साथ समाज में गौरव के साथ जीवन यापन करने का प्रयास करती है। जो अपने व्यवहार एवं आचरण का परिचय रवींद्र कालिया इस प्रकार से करते हैं जैसे की "गुलाम मुहम्मद ने हसीना के गाल पर हल्का-सा तमाचा लगाया और बोला, मैं तन्हाई से ऊबकर ही तो तुम्हारे पास आता हूँ। घबराओ नहीं लतीफ़ छह से पहले नहीं लौटेगा। हसीना खाट से उतरकर खड़ी हो गई। और बाहर उसी पत्थर पर जाकर बैठ गई जहाँ कुछ देर पहले गुलाम मुहम्मद बैठा था।"[7]

खुदा सही सलामत है इस उपन्यास में पंडिताइन अपने परिवार की आर्थिक समस्या से निपटने के लिए एवं सुखी जीवन जीने के लिए जब वह घर की चार दीवारों के बाहर आकर काम करने का प्रयास करती है तो वह कैसी परिस्थितियों से गुजरती है एवं वह समाज में कई प्रकार के शोषण का शिकार होती है। इसके उपरांत भी वह काम कर के अपने घर को संभालने का प्रयास करती है। इसे रवींद्र कालिया इस घटना के द्वारा दर्शाने का प्रयत्न करते हैं। पंडिताइन मास्टर के घर में बर्तन एवं साफ-सफाई का काम करने लगती है। परंतु मास्टर उसके शारीरिक सौंदर्य को देखकर उसका लैंगिक शोषण करने लगता है। इसी के साथ उसका बेटा एक दिन पीछे से आकर उसके वक्ष को दबाकर उसका लैंगिक शोषण करता है। ऐसी घटना के बावजूद भी पंडिताईन अपनी दरिद्रता को मिटाने के लिए पीड़ा को सहकर काम करती हुई दिखाई देती है। लेकिन वह अपने चरित्र को बहुत ही साफ सुथरा रखने का प्रयत्न करती हुई दिखाई देती है। जैसे ही उसका मास्टर का बेटा उसके वक्ष को दबाने पर उसे एक कडा सा थप्पड़ मार देती है। इसका तात्पर्य यह है कि वह चरित्र को पवित्र रखने का संघर्ष करती है। कामवासना से भरा हुआ यह पुरुष समाज के प्रति अपने चरित्र की पवित्रता का परिचय एक थप्पड़ के

द्वारा पंडिताइन करती है। इस प्रकार के सामाजिक जीवन में भारतीय नारी कैसे अनेक प्रकार के संघर्षों से गुजरती है इसका उदाहरण यहाँ पर रवीन्द्र कालिया इस प्रकार दिखाते हैं जैसे "उनका लड़का सुनील आया और वह अभी जीने तक भी न पहुँची थी कि लड़के ने उसे पीछे से इस तरह बाँहों में भींच लिया कि पंडिताइन का वक्ष बुरी तरह भिंच गया। पंडिताइन ने पीछे मुड़कर उसकी तरफ़ देखा और उल्टे हाथ से एक ऐसा झापड़ रसीद किया कि वह अपनी नाक थामकर वहीं ज़ीने पर बैठ गया। उसकी नाक से खून बहने लगा।"8

निष्कर्ष: अज़ीज़न, चमेली की पुत्री हसीना, शिवलाल की पत्नी गुलाबदेही और पंडिताइन के माध्यम से भारतीय समाज में नारी के अलग-अलग सन्निवेश एवं संदर्भों में कैसे वह शोषण एवं पीड़ा का अनुभव करती है और इसके साथ ही वह समाज में गौरव एवं सम्मान के साथ जीवन जीने का प्रयास करती है इसका चित्रण रवीन्द्र कालिया अपना उपन्यास 'ख़ुदा सही सलामत है' में किया है। भारतीय नारी की वास्तविकता और सामाजिक घटनाओं को सामने रखकर स्त्री के संघर्षमय जीवन एवं चरित्र को चित्रीत करने का प्रयत्न किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि:

1. व्होरा आशारानी, भारतीय नारी, दशा और दिशा, पृ 13 नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1983
2. 'ख़ुदा सही सलामत है' रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2019 पृ.सं 57
3. 'ख़ुदा सही सलामत है' रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2019 पृ.सं 19
4. 'ख़ुदा सही सलामत है' रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2019 पृ.सं 29
5. 'ख़ुदा सही सलामत है' रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2019 पृ.सं 62
6. 'ख़ुदा सही सलामत है' रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2019 पृ.सं 257
7. 'ख़ुदा सही सलामत है' रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2019 पृ.सं 111
8. 'ख़ुदा सही सलामत है' रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2019 पृ.सं 217